प्रेम वाहिनी

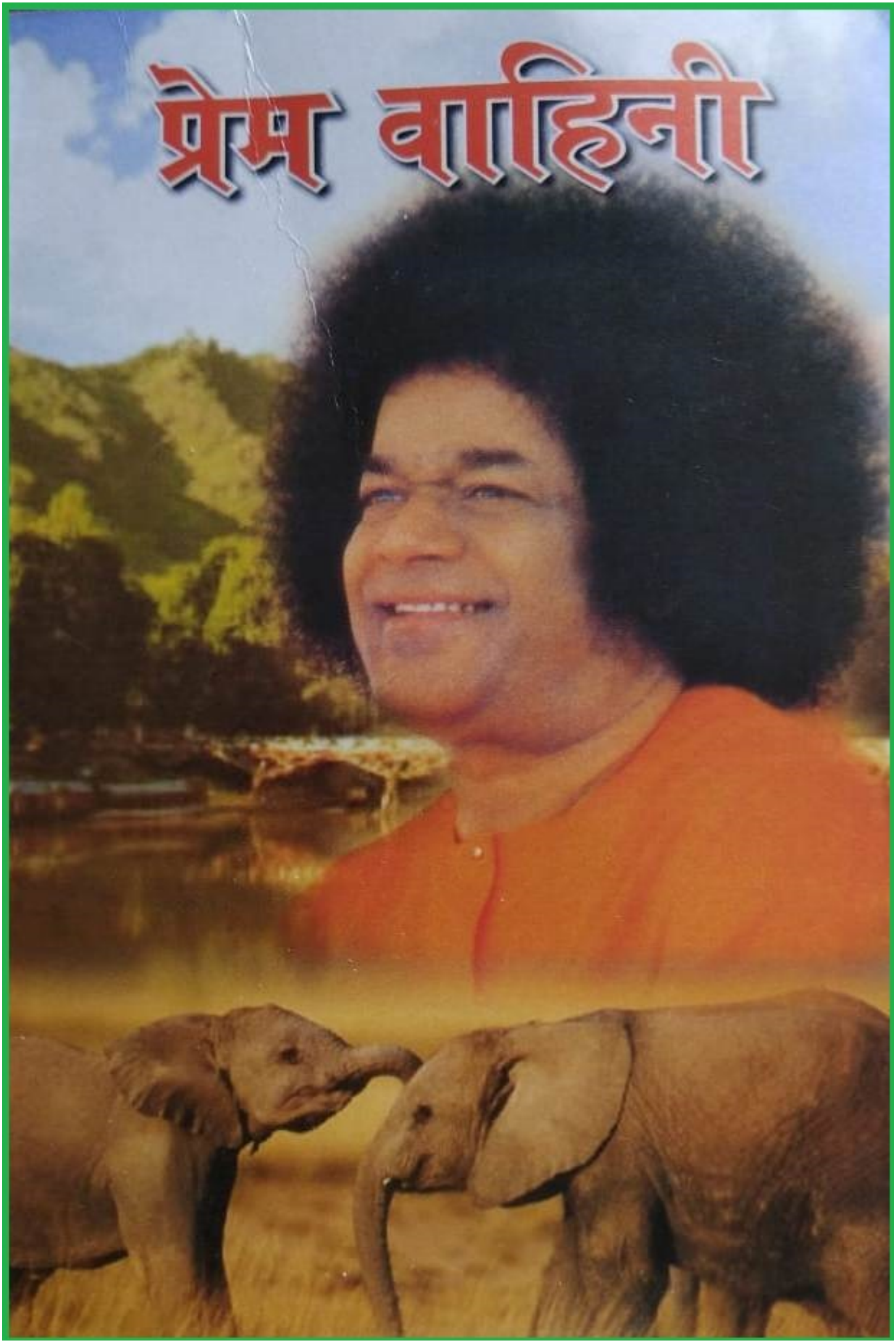

८

सत्य ही परमात्मा है

इस स्थिति को प्राप्त करने के लिये भौतिक जीवन एक नींव होती है। यह नैतिक जीवन सद्-असद् के विवेक पर आधारित होता है। जिस प्रकार मोती को प्राप्त कर सीपी या उसके ऊपरी आवरण को त्याग दिया जाता है। सारांश में जो सत्य है उसे ग्रहण करके अनावश्यक का त्याग किया जाता है। फिर वैयक्तिक प्रयास और भगवत्कृपा दोनों का ही होना आवश्यक है। 'शरीर और आत्मा पृथक्-पृथक् हैं' इस पाठ का सतत् अध्ययन और निदिध्यासन परमावश्यक है। यह अत्यन्त लाभकारी अभ्यास है। आध्यात्मिक और अलौकिक दोनों प्रकार के जीवन के लिए ऐसा विवेचन आवश्यक है। सत्य का साक्षात्कार पाने के लिए वह अपरिहार्य है, सृष्टि, स्थिति, और विनाश में जो सत्य निहित हैं वह सत्य ही स्वयं परमात्मा है।

इस परमात्मा की सेवा-पूजा के लिए भोजन की पवित्रता के नियम का पालन करना चाहिए। भोजन के सम्बन्ध में मुख्य विचारणीय प्रश्न 'कितना' नहीं बल्कि 'किस प्रकार' का है। निस्संदेह मात्रा का प्रश्न भी उपेक्षणीय नहीं है, परन्तु भोजन मात्र ही क्यों आवश्यक है? सेवा के लिए शक्ति चाहिए और शक्ति प्राप्त करने के लिये भोजन की आवश्यकता होती है। दूसरे शब्दों में सेवायज्ञ फलप्रद होवे, भोजन की आवश्यकता होती है और यह भोजन शुद्ध पवित्र होना ही चाहिये। भोजन के इस पार्श्व पर भी ध्यान देना ही पड़ेगा।

इस प्रकार प्रत्येक को अपनी आदतों और चारित्रिक विशेषताओं पर ज्यादा ध्यान देते रहना चाहिए। तब शरीर के प्रति लगाव क्रमशः घटता जायेगा, और आत्मानन्द प्राप्ति का कार्य सरल और सुकर हो जावेगा।

वास्तव में आत्मसाक्षात्कार से पूर्व मनुष्य को ये विभिन्न कर्तव्य करने ही पड़ते है; क्योंकि इसी प्रकार के आध्यात्मिक जीवन से ही यह पवित्रता प्राप्त करता है और उस पवित्र स्वभाव से ही परमात्मा का साक्षात्कार संभव हो पाता है। बिना इनमें संलग्न हुए, इस पीड़ा से कि 'परमात्मा का दर्शन नहीं होता है', चिल्लाना और

विलाप करना व्यर्थ हो जाता है।

इस भौतिक जड़वादी विश्व में व्यक्ति आध्यात्मिक मूल्य की महत्ता नहीं अनुभव कर पाता है यदि पहले से उसे ऐसे आध्यात्मिक जीवन और उसकी पवित्रता का स्वाद नहीं मिला होता है। ऐसा भी कह सकते हैं कि आध्यात्मिक प्रयास तभी मिलता है जब कि व्यक्ति को इसके मूल्य और महत्ता का ज्ञान हो चुकता है। यह तो वही बात हुई कि तैरना सीखने के बाद पानी में उतरना; परन्तु बिना जल में प्रवेश किये तैरना कैसे आ सकता है? कुछ तैराने वाले उपकरणों से संयुक्त होकर जल में उतर जाओ। इसी प्रकार मन में कुछ तैराने वाला साधन संयुक्त करके, निर्भय होकर आध्यात्मिक साधन में प्रवृत्त हो जाओ। तब तुम स्वयं आध्यात्मिक प्रयास का मूल्य समझ जाओगे। जिन्होंने उस ओर यात्रा की है वे ही आध्यात्मिक मार्ग की प्रकृति और दशा से परिचित होते हैं। वे जानते हैं कि सत्य और विवेक का पथ परमात्मा की ओर ले जाता है जिन्होंने उस मार्ग पर कभी कदम नहीं रखा है, और जो उसके अस्तित्व से परिचित नहीं हैं, वे इसे न तो स्वयं को और न दूसरों को ही समझा सकते हैं।

केवल परमात्मा ही वास्तविकता है। परमात्मा सत्य है, प्रेम है, अतः उसका सत्य, प्रेम के रूप में ध्यान करो। जिस रूप में तुम उसका ध्यान करोगे, उसका उसी रूप में साक्षात्कार कर पाना भी संभव है। सदा उसके भक्तों की संगति में रहो। इस सत्संग से विवेक और वैराग्य तुम्हारे हृदय में न केवल जागृत होंगे बल्कि उनकी वृद्धि भी होगी। इससे आत्मा सशक्त होगी। तुम्हें आन्तरिक शान्ति प्राप्त होगी। तब तुम्हारा मन परमात्मा में लय हो जावेगा।

हर काम जो तुम करो, अपनी समस्त शक्ति और चातुर्य, जो तुम्हें भगवान ने दिया है, से करो। सत्य बोलो और सच्चाई का व्यवहार करो। प्रारम्भ से तुम्हें इस ढंग से असफलता और कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है और कष्ट भी मिल सकता है; परन्तु अन्ततोगत्वा तुम्हें निश्चय ही सफलता प्राप्त होगी। विजय और आनन्द की भी अनुभूति होगी। (यहाँ पर मुझे 'सत्यमेव जयते नानृतम्' का कथन स्मरण हो रहा है)। अपने व्यवहार से, अपने जीवन यापन के ढंग से, तुम सत्य का साक्षात्कार कर सकते हो; तुम परमात्मा को प्राप्त कर सकते हो।